कपड़ा मिलों के आधुनिकीकरण के लिए कोष

440. **श्री रणजीत सिंह :**

डा० जिनेन्द्र कुमार जैन :

क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि कपड़ा मिलों के आधुनिकीकरण के लिए 1986 में एक कोष की स्थापना की गई थी ;

(ख) यदि हां, तो मार्च, 1992 के अन्त तक उक्त कोष में से कितनी राशि वितरित की गई थी ; और

(ग) कितनी कपड़ा मिलों का आधुनिकीकरण किया गया है और उसके परिणामस्वरूप उत्पादन क्षमता में कितनी वृद्धि हुई है ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अशोक गहलोत) : (क) जी हां ।

(ख) और (ग) जैसा कि आई० डी० बी० आई० बम्बई ने सूचित किया है कि 31 मार्च, 1992 की स्थिति अनुसार वस्त्र आधुनिकीकरण निधि के अन्तर्गत आधुनिकीकरण सहायता के रूप में 836 करोड़ रु० की राशि वितरित की जा चुकी है । इस योजना के अन्तर्गत 174 मिलों का पूरी तरह से आधुनिकीकरण कर दिया गया है। उन्नत मशीन की क्षमता/उपयोगिता तथा बेहतर प्रौद्योगिकी के परिणामस्वरूप उत्पादन के स्तर में कुछ सीमा तक वृद्धि होने की आशा है । आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप उच्चतर क्षमताओं के लिए तैयार किए गए नवीनतम उपकरणों की वजह से भी कुछ सीमा तक क्षमता में वृद्धि होने की आशा है, तथापि उत्पादन में वृद्धि मामला-दर-मामला भिन्न होने के कारण वृद्धि की मात्रा को मापना संभव नहीं है ।

अखिल भारतीय हथकरघा बुनकर सम्मेलन (ऑल इंडिया हैंडलूम वीवर्स कांफ्रेंस) की मांग

441. **श्री रणजीत सिंह :** क्या वस्त्र मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि अखिल भारतीय हथकरघा बुनकर सम्मेलन (ऑल इंडिया हैंडलूम वीवर्स कांफ्रेंस) ने हाल ही में अपनी उस मांग को दोहराया है कि वस्त्रों की 22 किस्मों के विनिर्माण का एकाधिकार हथकरघा उद्योग को दिया जाना चाहिये; और

(ख) यदि हां, तो ये किस्में कौन-कौन सी हैं और उक्त मांग के प्रति सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अशोक गहलोत) : (क) जी हां ।

(ख) हथकरघा क्षेत्र के लिए आरक्षित 22 मदों की सूची विवरण के रूप में संलग्न है । सरकार एक नीति के अनुसार हथकरघा क्षेत्र में उत्पादन के लिए मदों के आरक्षण हेतु वचनबद्ध है ।

विवरण

क्र० सं०	मद	हथकरघा क्षेत्र में आरक्षित मदों की किस्में
1	2	3
1.	साड़ी	वे साड़ियां जिनमें बॉर्डर अथवा पल्लू बुना जाता है और साड़ी में कहीं भी अतिरिक्त ताने अथवा अतिरिक्त बाने का प्रयोग किया गया हो [100 प्रतिशत सिंथेटिक फाइबर से तैयार की गई हैं साड़ियां तथा जिन साड़ियों में 45 प्रतिशत (भार में) से अधिक मानव निर्मित फाइबर का प्रयोग किया गया हो वे इसमें शामिल नहीं होंगी] ।

1	2	3
2	कोटा डोरिया साड़ी	वे साड़ियां जो सूती अथवा सूती प्रधानता के साथ-साथ किसी अन्य रेशे के मिश्रण से तैयार की जाती हैं और जिनमें धारीदार अथवा चारखानों के नमूने में डोरी का बुन दिया जाता हो ।
3.	बांधन और रंजित साड़ी तथा रंजित सामान	सभी प्रकार की बांधन और रंजित साड़ी तथा रंजित सामान
4.	धोती	ऐसी धोतियां जिनमें बुनाई में बॉर्डर हो और बॉर्डर में अधिक ताने का प्रयोग किया गया हो [100 प्रतिशत सिंथेटिक फाइबर से तैयार की गई साड़ियां तथा जिन साड़ियों में 15 प्रतिशत (भारत में) से अधिक मानव निर्मित फाइबर का प्रयोग किया गया हो वे इसमें शामिल नहीं होंगी]
5.	गमछा और अंगवस्त्र	(क) केवल सूती गमछे जो बुनाई में तैयार किये जाते हैं । (ख) सादी बुनाई में किसी भी फाइबर से (स्वच रेशम को छोड़कर) तैयार किया गया अंगवस्त्र जिसमें बॉर्डर हो और बॉर्डर में अतिरिक्त ताने का प्रयोग हो ।
6.	लुंगी	सादी बुनाई में चारखाना के डिजाइन वाली लुंगियां जिनमें स्वच सिल्क को छोड़कर किसी भी फाइबर का प्रयोग किया गया हो ।
7.	कमीज का कपड़ा	केवल 100 प्रतिशत सूती चारखानों के डिजाइन का कमीज का कपड़ा ।
8.	क्रेप वस्त्र	अच्छी तरह ऐंठे सूत के प्रयोग से केवल 100 प्रतिशत सूती क्रेप वस्त्र ।
9.	तौलिए	सूती अथवा सूत से मिश्रित धागे (टेरी टॉवल को छोड़कर) के प्रयोग से तैयार किए गए तौलिए जिसमें बॉर्डर अथवा शीर्ष हो ।
10.	खेस	डबल क्लॉथ बुनाई में तैयार किया गया ताने में 2/17 एस से 2/22 एस और बाने में 8 एस से 12 एस के धागे के प्रयोग से सूती अथवा कृत्रिम रेशम खेस ।
	(ख) पलंग की चादर	सूती अथवा कृत्रिम रेशम की पलंग की चादरें जिनमें रंगीन सूत से बॉर्डर अथवा शीर्ष (हैडिंग) तैयार किया गया हो ।
	(ग) बैड कवर	सूती अथवा रेशम के बैड कवर जिन में सजावटी अथवा रंगीन सूत से बॉर्डर अथवा शीर्ष (हैडिंग) तैयार किया गया हो ।
	(घ) पलंग पोश	सूती अथवा कृत्रिम रेशम के पलंग पोश जिसमें उभरी हुई जाक्वार्डियों में बुने हुए बॉर्डर अथवा शीर्ष हो ।
	(ङ) साज-सज्जा का सामान	दोहरे कपड़े की बुनाई अथवा पोक बुनाई से तैयार किया गया सूती अथवा कृत्रिम रेशम साज-सज्जा का सामान (दीवार दरी सहित)
11.	टेबल क्लॉथ, टेबल मैट और नैपकिन्स	सूती अथवा कृत्रिम रेशम से तैयार की गई मदें जिनमें चारों ओर बॉर्डर बुना जाता है ।
12.	डस्टर और बस्ता	सादे अथवा ट्विल रूप से बुने हुए सूती डस्टर और बस्ते जिनमें मोटे धागे (10 एस काउंट से अधिक नहीं) का प्रयोग किया गया हो ।
13.	चादर	सूती अथवा मिश्रित धागे के प्रयोग से चारखानों अथवा स्ट्रैप लूम में तैयार की गई चादरें ।
14.	जामाकालम दरी अथवा डूरेट	सूती अथवा कृत्रिम रेशम अथवा ऊनी धागे के मिश्रण से ताने और बाने में 4 एस से 12 एस की रेंज के मोटे काउंट के प्रयोग से तैयार किया गया मोने रंग में तैयार की गई दरी व डूरेट ।

1	2	3
15.	बकरम कपड़ा	ताने और बाने में 8 एस से 12 एस के काउंट के सूती, ऊनी, जूट अथवा उनके मिश्रण धागे से तैयार किया गया बकरम कपड़ा।
16.	गंधक क्लॉथ	ताने में रेशमी अथवा कृत्रिम रेशम और बाने में सूती धागे के प्रयोग से रंगीन स्ट्रिपों वाला साटिन बुनाई में तैयार किया गया मंलरू कपड़ा।
17.	जी रीड पिक क्लॉथ	(1) सूती कपड़ा जिसके ताने व बाने में 20 एस काउंट के धागे का प्रयोग किया गया हो और रीड व पिक क्रमशः 36 व 32 से कम हो।
		(2) सूती कपड़ा जिसमें ताने व बाने में 22 एस से 40 एस के काउंट से अधिक का सूत प्रयोग किया गया हो और रीड व पिक क्रमशः 44 और 40 से कम हो।
		(3) सूती कपड़ा जिसमें ताने व बाने में 40 एस के काउंट से अधिक का सूत प्रयोग किया गया हो और रीड व पिक क्रमशः 44 और 40 से कम हो।
		नोट: इस दिशा में इनके लिए कुछ भी लागू नहीं होगा :—
		(क) धोती और साड़ी
		(ख) सुसीज
		(ग) मच्छर दानी का कपड़ा
		(घ) लंबा कपड़ा
		(ङ) जालीदार कपड़ा
		(च) रंजित और छपा हुआ कपड़ा और
		(छ) कोटिड वस्त्र।
18.	रेशम	(1) सभी रेशमी साड़ियां जिनमें बॉर्डर व पल्लू बुना हुआ हो और 25 प्रतिशत से अधिक शुद्ध रेशम (भार में) के मिश्रण का प्रयोग किया गया हो। इसमें जॉरजट, शिफान और वेल साड़ियां शामिल नहीं हैं।
		(2) सभी रेशमी धोतियां जिनमें बॉर्डर व पल्लू बुना हुआ हो और 25 प्रतिशत से अधिक शुद्ध रेशम (भार में) के मिश्रण का प्रयोग किया गया हो।
19.	कंबल अथवा कालीन	औसत 34 माइक्रोन की ऊन और परिष्कृत की गई मोटी ऊन जिसका वजन 300–450 ग्राम वर्ग मीटर है के प्रयोग से तैयार किया गया कंबल जिसकी रेशेदार सतह हो और माईलिंग व रेजिंग द्वारा तैयार किया गया हो (इसमें शॉडी ऊनी यार्न से बने कंबल शामिल नहीं हैं)।
20.	बैरक कंबल	औसत 34 माइक्रोन और उससे मोटे ऊनी प्राकृतिक सफेद/काली ऊन धागे से बने माईलिंग और रेजिंग द्वारा तैयार किए गए रेशेदार सतह वाले बैरक कंबल (इसमें शॉडी ऊनी यार्न से बने कंबल शामिल नहीं हैं)।
21.	शॉल, स्कार्फ, मफलर, पंखी आदि।	केवल ऊनी धागे अथवा अन्य किसी रेशे के मिश्रण से डिजाइन में तैयार किये जाने वाली सभी इस प्रकार की मदें।
22.	ऊनी हथकरघा	100 प्रतिशत शुद्ध ऊनी धागे से टुइल बुनाई में तैयार किया गया ऊनी कपड़ा जो चारखाने अथवा स्ट्रिप डिजाइन में तैयार किया गया हो और ताने और बाने में 7 एन एम से 9 एन एम काउंट के धागे का प्रयोग किया गया हो।